नयी प्रतिष्ठा, नया सम्मान दिलाता ग्रामोत्थान अभियान

आदर्श ग्राम विकास योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ संगठन एवं शांतिकुंज की यशस्वी पहल

गायत्री परिवार का विचार क्रांति अभियान अद्वितीय है, किंतु स्वार्थ और उपभोग के चरम पर पहुँच चुकी दुनिया में धर्म का जितनी तेजी से व्यवसायीकरण होता जा रहा है, लोगों की आस्थाएँ

आदरणीय डॉ. साहब-जीजी दल को भावभरी विदाई देते हुए

भी उसी अनुपात में डिग रही हैं। यही कारण है कि अथक प्रयासों के बावजूद समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग विचार क्रांति अभियान की दस्तक से अप्रभावित ही है। छत्तीसगढ़ प्रांत के जाँजगीर, रायगढ़ एवं कोरबा जिले के छः गाँवों में २४ दिसम्बर ०७ से १ जनवरी २००८ तक गायत्री परिवार द्वारा चलाये गये ग्राम विकास अभियान ने जिस प्रकार से समाज और वहाँ के विचारवंतों की आस्था को छुआ, उससे

स्वागत में पलक पाँवड़े बिछाते ग्रामवासी

दीपयज्ञ के अवसर पर ग्रामीणों को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि, ढेंगुरडीह के मंच पर टोली के साथ वन मण्डलाधिकारी

यही प्रतीत होता है कि गायत्री परिवार को अपने लक्ष्य एवं उद्देश्यों से समाज को अवगत कराने के लिए समाज निर्माण के आन्दोलनों में प्रत्यक्ष भागीदारी की भी नितांत आवश्यकता है।

छत्तीसगढ़ प्रांत का यह ग्राम विकास अभियान श्री केके लाम्बा, श्री रोहिताश कसेर, श्री भोजराम पटैल, डॉ.अरुण मढ़रिया सहित छत्तीसगढ़-उड़ीसा के जोनल संगठन की पहल और शांतिकुंज के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। चंद्रपुर, जो माता चंद्रहासिनी के मंदिर के कारण लाखों लोगों की आस्था का केन्द्र है, को बेस कैम्प बनाया गया। यहाँ से जाँजगीर जिले के ग्राम अमलडीहा, कोतासुरा एवं बिलाईगढ़; रायगढ़ जिले के गाँव नवरंगपुर एवं चंद्रपुर तथा कोरबा जिले के गाँव ढेंगुरडीह में ग्राम स्वच्छता अभियान चलाये गये। इनमें शांतिकुंज से पहुँची सर्वश्री विष्णु मित्तल, कामता प्रसाद साहू, प्रेमलाल बिर्ला, डॉ. देवराज साहू, हेमंत साहू, शिवचरण पटेल, कृष्णा अमरुते, संजय पटेल, किशन हिरवानी, दुखारु मरकाम, शरण सिंह मरकाम, बीरबल ध्रुव, चुन्नुलाल भानु एवं कैलाश गिरी की विशाल टोली के अलावा छत्तीसगढ़ के १६ तथा उड़ीसा के तीन जिलों से आये स्वयंसेवकों की बड़ी टोली ने भाग लिया।

प्रबुद्धों को भी भाया

शांतिकुंज की आदर्श ग्राम विकास योजना का पूरे क्षेत्र में जोरदार स्वागत हुआ। ग्रामवासी तो इसके लिए पलक पाँवड़े बिछाये पहले से ही तैयार थे, जबकि वहाँ प्रबुद्ध जन-प्रशासकों को समाचार पत्र सहित विविध माध्यमों से इस अभियान की जानकारी मिले, तब तक समग्र अभियान अपने अंतिम चरण पर पहुँच चुका था। इसके बावजूद जिसने भी इसे देखा-समझा उसने गायत्री परिवार के इस स्वरूप का हृदय से स्वागत किया और सहयोग की तत्परता दर्शायी।

ग्राम स्वच्छता अभियान का अंतिम कार्यक्रम कोरबा जिले के ढेंगुरडीह गाँव में था। इस गाँव के लोग शहरों की संस्कृति को जानते तक नहीं हैं। गाँव में अब तक कोई बड़ा प्रशासक या अधिकारी भी नहीं पहुँचा था। उसी गाँव में जब गायत्री परिवार का सफाई अभियान चल रहा था, तब स्वयं जिलाधीश श्री अशोक अग्रवाल ढेंगुरडीह पहुँचे और अपने हाथों में फावड़ा लेकर वहाँ पानी संग्रहण के स्थानों पर सोक पिट बनाने में सहयोग किया। उनका कहना था कि सरकार तो योजनाएँ बनाकर ही रह जाती है, लेकिन गायत्री परिवार ने गाँवों के विकास के लिए योजना बनाकर उसे कार्यान्वित भी कर दिखाया है। वन मण्डलाधिकारी श्री पाण्डेय ने भी उस गाँव के श्रमदान में भाग लिया। उन्होंने समग्र योजना की भूरि-भूरि सराहना करते हुए अपनी ओर से गाँव में परम पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय के समग्र ७० खण्डों की स्थापना कराई।

कार्य योजना सार-संक्षेप में

शांतिकुंज की टोली २१ दिसम्बर को शांतिकुंज से रवाना होकर १४५० कि.मी. का मार्ग तय करते हुए २३ दिसम्बर की शाम को चंद्रपुर पहुँची। यह टोली अपने वाहन में खाद्य सामग्री, चिकित्सा शिविर के लिए आवश्यक औषधियाँ, कार्यक्रम के लिए साउण्ड सिस्टम, जेनरेटर, कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण का सामान आदि सब अपने साथ लेकर गयी थी। चंद्रपुर पहुँचने पर उनका भावभरा स्वागत हुआ। गोष्ठी में अगले दिन से अपनाये जाने वाली कार्ययोजना पर चर्चा हुई आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये।

चयनित सभी गाँवों में कार्यक्रम संयोजकों द्वारा सर्वेक्षण किया जा चुका था और गाँववासियों को इस अभियान की सूचना दे दी गयी थी। अत: प्रत्येक गाँव में स्वच्छता अभियान के लिए जबरजस्त उत्साह दिखाई दिया। उन्होंने अपनी लोक परम्पराओं का श्रेष्ठतम निर्वाह करते हुए शांतिकुंज प्रतिनिधियों का शानदार स्वागत किया और स्वच्छता अभियान में भाग लिया।

इन गाँवों में भी पिछले दिनों औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में अपनायी गयी कार्ययोजना के अनुरूप सक्रियता अपनायी गयी। पूरे गाँव में सफाई-श्रमदान के बाद व्यसनमुक्ति-जन जागरण रैली निकाली गयी। तत्पश्चात् दीपयज्ञ करते हुए विचार क्रांति का संदेश जन-जन तक पहुँचाया गया। इनके समानांतर कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण, चिकित्सा शिविर, दीवार लेखन जैसे कार्य भी चलते रहे।

गाँवों में ग्राम स्वच्छता अभियान का जोरदार स्वागत हुआ। गाँववासियों ने अपने घरों के समक्ष बड़ी सुंदर रंगोलियाँ सजाकर, दीप जलाकर शांतिकुंज प्रतिनिधियों का स्वागत किया। स्वच्छता-श्रमदान में तीन वर्ष के बच्चों से लेकर ८५ वर्ष तक के बूढ़ों ने सोल्लास भाग लिया। स्वच्छता के क्रम में पानी के रुकाव एवं जमाव की समस्या, बंद नालियों को खोलना, सोक पिट बनाना, सड़कों की सफाई जैसे कामों को वरीयता दी गयी। सफाई के बाद स्वच्छ किए स्थानों पर कीटनाशकों का छिड़काव किया गया।

शांतिकुंज के चिकित्सक डॉ. देवराज तथा छत्तीसगढ़-उड़ीसा जोन के संयोजक डॉ. अरुण मढ़रिया की टोली ने प्रत्येक गाँव में चिकित्सा शिविर लगाये। कुल २१५८ ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें एक सप्ताह की आयुर्वेदिक औषधियाँ प्रदान की गयीं। चिकित्सकों ने ग्रामवासियों को उपलब्ध जड़ी-बूटियों से सामान्य रोगों के स्वत: उपचार, योगाभ्यास, नियमित उपासना से तनाव मुक्ति एवं मन की शांति की प्रेरणाएँ भी प्रदान कीं। सफाई से पहले गाँववासियों को योग-व्यायाम भी कराया गया।

श्री कामता साहू ने गाँव वासियों को मसाले, अमृतधारा, बाम जैसी दवाइयाँ, मंजन, तेल, साबुन, अगरबत्ती आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया और स्वनिर्मित-सस्ती वस्तुओं का उपयोग करते हुए स्वावलम्बन की प्रेरणा प्रदान की।

श्री विष्णु मित्तल ने दीपयज्ञ के अवसर पर गायत्री परिवार के उद्देश्य एवं गतिविधियों के साथ

चिकित्सा शिविर में ग्रामीणों का उपचार

युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी का सारगर्भित परिचय दिया। यह कार्यक्रम ग्रामवासियों के उत्थान के लिए समर्पित रहा। उन्हें सप्त आन्दोलनों की जानकारी देकर उनमें भागीदारी करने एवं प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डलों के गठन की प्रेरणा दी गयी। छहों गाँवों के दीपयज्ञ में ११८३ लोगों ने शराब, तंबाकू, सिगरेट आदि छोड़ने के संकल्प लिए। १०० से अधिक युवकों ने दहेज रहित विवाह के संकल्प लिए।

सोकपिट बनाने में जुटे कोरबा के कलेक्टर श्री अग्रवाल

प्रत्येक गाँव में जिस दिन स्वच्छता-सेवा अभियान चलाया गया, प्रत्येक माह की उसी तारीख को सामूहिक श्रमदान का कार्यक्रम रखने तथा दिसम्बर माह में उस दिन वार्षिकोत्सव मनाने के सामूहिक संकल्प लिए गये। जोनल संगठन एवं समीपवर्ती जिला संगठनों ने इस अभियान के संचालन की जिम्मेदारी ली। इतना ही नहीं, प्रत्येक गाँव ने हर वर्ष ५ नये गाँवों में आदर्श ग्राम विकास योजना को कार्यान्वित करने के संकल्प लिए। इस प्रकार एक-एक गाँव आसपास के २५ गाँवों में अगले पाँच वर्षों में इस योजना का विस्तार करेगा।

बात गाँव-गाँव की

अमरडीहा-११०० लोगों की आबादी वाले इस गाँव में स्थानीय कीर्तन मंडलियों ने शांतिकुंज प्रतिनिधियों का स्वागत किया। वहाँ की गायत्री प्रज्ञापीठ के दर्शन के बाद कार्य आरंभ हुआ। इस दिन पूरे गाँव का भोजन एक साथ पका और सभी ने बिना किसी भेदभाव के एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

नवरंगपुर-में १८ कुमारी कन्याओं ने अभियान की सफलता के लिए पिछले एक माह तक प्रतिदिन अलग-अलग घरों में दीपयज्ञ कराये।

कोतासुरा-व्यसन मुक्त गाँव है। वहाँ चली आ रही बलिप्रथा का भी अंत हो चुका है। इस अभियान के साथ गाँववासियों ने अपने गाँव को आदर्श गाँव बनाने का संकल्प लिया। गाँववासियों ने सफाई के बाद अपने घरों के सामने आकर्षक रंगोली सजाई और दीप जलाए।

बिलाईगढ़-में कुछ लोग इस अभियान को राजनैतिक दलों की तरह स्वार्थ प्रेरित मान रहे थे। जब उन्होंने सफाई एवं बनाये गये सोक पिटों को देखा तो वे भी नतमस्तक हो गये।

चंद्रपुर-जन-जन की आस्था के केन्द्र चंद्रपुर में सफाई अभियान के बाद अनेक गणमान्य रात के १२ बजे तक टोली से मिलने, योजना की जानकारी लेने और धन्यवाद देने आते रहे। वहाँ एक प्रबुद्ध वर्ग गोष्ठी भी हुई।

ढेंगुरडीह-के सफाई अभियान में जिलाधिकारी श्री अशोक अग्रवाल ने एवं वन मंडलाधिकारी श्री अनुज पाण्डेय ने भाग लिया। गाँव में घर-घर तिलक, चंदन एवं पुष्पवर्षा कर टोली का स्वागत किया गया।

सभी कार्यक्रमों के अंत में टोली का विदाई समारोह बड़ा मार्मिक था। बरमकेला के श्री भोजराम पटैल ने अपनी भाषा में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा, "टिटहरी के माँद म मयूर के पहुँना।" अत: शांतिकुंज प्रतिनिधि टिटहरी के घर मयूर से मेहमान हैं।

श्रमदान की झलकियाँ-सफाई करते शांतिकुंज के स्वयंसेवक और एक ग्रामीण

नेतृत्व ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है, क्योंकि वह प्रामाणिकता, उदारता और साहसिकता के बदले खरीदा जाता है।